

महनतकशों का पैगाम

महनतकशों के नाम

# मज़दूर मौचा

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com  
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

सासाहिक

वर्ष 31

अंक -31

फरीदाबाद

29 जुलाई-4 अगस्त 2018

फोन : - 9999595632

3

4

5

8

एम्स आज  
खुद बीमार

उधम सिंह  
का मुकदमा

गौ रक्षक  
बनाम  
गौ बालक

मेडिकल  
कॉलेज से  
बेखबर

## घर में नहीं हैं दाने अम्मा चली भुनाने न बिल्डिंग न टीचर, नये कॉलेज खोलेंगे खट्टर



मुख्यमंत्री खट्टर और शिक्षा मंत्री राम बिलास : न शिक्षा के प्रति इमानदारी और न विद्यार्थी के प्रति वफादारी!

फरीदाबाद (म.मो.) पांचड की नींव पर शिक्षा का मंदिर कैसे आनन्द-फ्रान भूमि खट्टर सरकार ने हरियाणा में 31 नये महिला कॉलेज खोलने का फैसला किया और उसे इसी साल से लागू कर दिया। प्रसाद में फरीदाबाद जिले के हिस्से में भी तीन कॉलेज आये। नचौली, सैकर 2 (बल्लबगढ़) और मोहना। दाखिले शुरू होने तक इन कॉलेजों की हालत ये थी कि न किसी प्राध्यापक की यहां तैनाती की गयी थी, न बिल्डिंग थी।

और दाखिलों के बवत कोई बच्चा नचौली और मोहना में तो दाखिला लेने को भी तैयार नहीं था। नचौली में तो लाख झूठ बोलकर भी प्रिंसिपल भगवती 46 बच्चे ही जमा कर पाई जबकि ये एकमात्र नया कॉलेज है जिसकी बिल्डिंग बनने लग रही है। अब नये दाखिले होने के बाद इन कॉलेजों की दुबारा खोज-खबर ली गयी।

सैकर दो के कॉलेज में कुल 260 सीटें स्वीकृत की गयी थीं जिनमें से 140 सीटें भी गयीं। यहां दो नये नियमित प्राध्यापक नियुक्त कर दिये गये हैं। (भौतिक विज्ञान व इतिहास) तथा चार विषयों, राजनीतिशास्त्र, कॉर्मस, अर्थशास्त्र व होमसाइंस के प्राध्यापक तिगांव, नेहरू कॉलेज और महिला कॉलेज से टुकड़ों में पढ़ाने आयेंगे, यानी हप्ते में दो या तीन

दिन। बाकी दिन वे अपने कॉलेजों में पढ़ायेंगे।

स्थानीय एम.एल.ए. मूलचंद और तिगांव की प्रिंसिपल श्रीमती सध्या, जो कि यहां का भी कार्यभार संभाले हुये हैं के प्रयासों से इस कॉलेज को राजकीय अदर्श कत्या विश्वालय बल्लबगढ़ में 10 कमरे दिये गये। भैतिकी और कम्प्यूटर की लैब भी तैयार हो गयी हैं। ये अलग बात है कि कॉलेज को 10 कमरे देने के लिये स्कूल को दो शिफ्टों में चलाना पड़ेगा जिससे यहां पढ़ने वाली लड़कियों को कितनी परेशानी होगी इसका अंदाजा ऊपर बैठे अफसरों को नहीं है। उनके लिये स्कूल

की लड़कियां 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' में शामिल नहीं हैं, सिर्फ कॉलेज की लड़कियां हैं।

मोहना महिला कॉलेज में 100 के करीब बच्चों ने दाखिला लिया है। यहां भी न तो कॉलेज की कोई बिल्डिंग है और न ही निकट भविष्य में बनने की सम्भावना है। फिलहाल यह कॉलेज भी मोहना के सरकारी स्कूल से चलाया जायेगा। स्कूल के बच्चे जायें भाड़ में। इस कॉलेज को नेहरू कॉलेज फरीदाबाद की प्रिंसिपल श्रीमती प्रीता संभालेंगी। यहां

दो नये प्राध्यापकों की नियुक्ति की गयी है, बाकी दिहाड़ीदारों से काम चलाया जायेगा।

नचौली में 80 बीए और 80 बीकॉम की कुल मिलाकर 160 सीटें हैं, जबकि घेर घोटकर सिफ्ट 46 बच्चों को ही भर्ती कर पाये हैं। इस कॉलेज की बिल्डिंग बनने लग रही है और लगभग 40 प्रतिशत काम पूरा बताया गया। लेकिन मजे की बात है कि कोई भी छात्र नचौली नहीं पढ़ना चाहती। उनको यह झूठ बोलकर बहकाया गया कि उनकी कक्षायें फरीदाबाद में ही लगेंगी।

अब प्रिंसिपल भगवती तो अपना उल्लू सीधा करके इस साल दिसम्बर में रिटायर होकर चली जायेंगी फिर बच्चे अगले साल खाओ और नचौली के। न कोई आने जाने की व्यवस्था है और न ही लड़कियों की सुरक्षा की। ध्यान रहे कि नचौली में दाखिला लेने वाली ज्यादातर लड़कियां फरीदाबाद की हैं न कि नचौली की। उधर नचौली में किसी नये प्राध्यापक की भी नियुक्ति नहीं हुई है।

नचौली के सरपंच ने यह भी बताया कि वे तो यहां लौं कॉलेज खुलवाना चाहते थे लेकिन सरकार ने उनको नहीं सुनी और महिला महाविद्यालय खोल दिया। अब यहां

के आस-पास के गांवों से मिलाकर 100 लड़कियां भी 12 वर्ष पास नहीं हुई हैं तो इस कॉलेज में दाखिला लेगा कौन।

जाहिर है कि फरीदाबाद की लड़कियों ने ही नचौली के कॉलेज में दाखिला लिया होगा और फिर अगले साल से या तो वे रोती-पीटी नचौली आयेंगी या फिर अच्छी सिफारिश होगी तो फरीदाबाद महिला कॉलेज में कक्षायें लगवा लेंगी। इनकी पढ़ाई का सारा भार राजकीय महाविद्यालय के प्राध्यापकों पर ही होगा। दोनों ही स्थितियों में नया कॉलेज खोलने का उद्देश्य पूरा नहीं होगा। यह भी सुनें में आया है कि जिन नये कॉलेजों में छात्राओं की संख्या 100 से कम होगी उनको बन्द कर दिया जायेगा। ऐसी स्थिति में नचौली कॉलेज की छात्राओं का क्या होगा, यह चिन्ता का विषय है।

स्पष्ट है कि खट्टर सरकार बिना कोई पैसा खर्च किये पुण्य कमाना चाहती है। पूरे देश में ढिंडोरा पीटना चाहती है कि वह महिलाओं की शुभचिंतक है जबकि वह छात्राओं की पोशानी का सबब है। न प्राध्यापक की भी नियुक्ति नहीं हुई है। नचौली के सरपंच ने यह भी बताया कि वे तो यहां लौं कॉलेज खुलवाना चाहते थे लेकिन सरकार ने उनको नहीं सुनी और महिला महाविद्यालय खोल दिया। अब यहां

## ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल ब्लड बैंक का खुन्दक खाये ड्रग इन्स्पेक्टर ने रोका लाइसेंस

फरीदाबाद (म.मो.) करीब 5 लाख मजदूरों को चिकित्सा सेवा प्रदान करने वाले ईएसआई सी मेडिकल कॉलेज अस्पताल ने अपने मरीजों को चिकित्सा सुविधायें प्रदान करने के लिये विशेष डॉक्टरों व अन्य आवश्यक स्टाफ के अतिरिक्त करोड़ों रुपये के आधुनिक उपकरण एवं मरीजों आदि स्थापित किये हैं। इसी श्रृंखला में एक बेहतरीन एवं आधुनिकतम ब्लड बैंक भी स्थापित किया गया है। ऐसा उत्कृष्ट ब्लड बैंक हरियाणा भर में शायद ही कोई और होता है।

ब्लड बैंक के लिये आवश्यक शर्तों एवं औपचारिकताओं की जांच करके लाइसेंस देने का अधिकार हरियाणा सरकार के पास है। इस काम के लिये ड्रग कंट्रोलर का महकमा है जो राज्य भर के तमाम दवा विक्रेताओं तथा स्टॉकिस्टों की जांच पड़ताल के नाम पर मंथली वसूलता है। इसी विभाग का एक इन्स्पेक्टर गोदारा है जिसका कार्यालय सेक्टर 30 में है। गोदारा ने ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल के ब्लड बैंक का पहला निरीक्षण जनवरी 2018 में किया था। इस दौरान निरीक्षण टीम ने कुछ छोटी-मोटी कमियां बताईं जिन्हें तुरंत पूरा करके पुनर्निरीक्षण हेतु आवेदन कर दिया जिस पर मार्च 2018 में यही टीम आई और ब्लड बैंक को पास करके लाइसेंस जारी करने की सिफारिश कर दी।

इसके बाद इस अस्पताल ने खून से प्लेटलेट्स व प्लाज्मा अलग करने की मरीजों तथा कुछ अन्य मरीजों लगाई जो मरीजों को बेहतर चिकित्सा सुविधा देने

बस इसी खुन्दक में गोदारा उछला-उछला फिरता रहा। वैसे यह रहस्य भी किसी से छिपा नहीं है कि प्राइवेट संस्थानों में गोदारा व उनकी टीम निरीक्षण के नाम पर खासी वसूली करती है। परन्तु ईएसआईसी जैसे सरकारी संस्थान वाले तो चाय भी पिला दें तो बहुत समझो। ऐसे में गोदारा ने एक नर्स को फरीदाबाद से गुड़गांव तबादला कराने की मांग कर डाली। वैसे आजकल तबादला भी अपने निरीक्षण में परी की जा चुकी थीं उन्हीं पर आप में एक उद्योग का दर्जा ले चुका है।

70-80 हजार मासिक वेतन पाने वाला गोदारा एक बदिया निजी कार व प्राइवेट ड्राइवर खरेता है। आज के जमाने में निजी कार और वह भी निजी ड्राइवर के साथ इस वेतन में रखना कठई संभव नहीं। यह तभी संभव हो सकता है जब ऊपर की कमाई की जाय। इस काम के लिये फरीदाबाद से ज्यादा बदिया हरियाणा में तो कोई और जगह है नहीं। इस लिये बीते बीसियों वर्ष से गोदारा यहीं अपने पंजे गाड़े बैठा है।

उसके शिकार तमाम बड़े-छोटे निजी अस्पतालों के अलावा छोटे से बड़े बदियों के बीच निरीक्षण का जिम्मा भी उसी के प्राइवेट ड्राइवर के पास है। इसनी 'ऊपजाऊ' जगह पर अपनी तैनाती बनाये रखने व लूट-मार कायम रखने के लिये सरकार के उच्चतम स्तर तक पकड़ बनाये रखना अति आवश्यक होता है और यह पकड़ तभी बनती है जब लूट का हिस्सा ऊपर तक पहुंचाया जाय।

जो आज साहिबे मसनद हैं

कल नहीं होंगे

किराएँ दारा हैं

जाती मकान थोड़ी है

सभी का खून है शामिल